# प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करना
# सत्र 23: शिष्यत्व संबंधपरक है (10c)

रॉन लाइवली, एम.डिव., एम.ए. द्वारा प्रस्तुत – BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

**चरण 1**: प्रारंभिक प्रार्थना

**चरण 2**: हर व्यक्ति स्मृति श्लोक उद्धृत करता है: छंद चरण: **इफिसियों 4:25-27**
***25 इसलिए, झूठ को त्यागकर, तुम में से हर एक अपने पड़ोसी से सत्य बोलो, क्योंकि हम एक-दूसरे के सदस्य हैं। 26 क्रोधित हो और पाप मत करो;***
***अपने क्रोध पर सूरज को अस्त न होने दो, 27 और शैतान को कोई मौका मत दो।***

**चरण 3**: *बाइबल अध्याय के पूरे या कुछ हिस्से को पढ़ें और चर्चा करें* - **इफिसियों 4**
**लिंक:** https://www.biblegateway.com/passage/?search=Ephesians%204&version=ESV

***चरण 4****:* व्यक्तिगत आवेदन और/या समूह चर्चाओं के लिए प्रश्न:

एक. यह सत्र धैर्य और ईमानदारी के गुणों को कवर करता है।
धैर्य: धैर्य क्रोधित करने में धीमा होना है। यह शिष्य-निर्माता की पहचान है।

दो. शिष्यों और प्रशिक्षकों को ईश्वरीय चरित्र विकसित करने के लिए चिरस्ट जैसी धैर्य और समय लगता है। यानी, यीशु जैसा बनने के लिए जिसे वे आप में देखना चाहिए।

तीन. ईमानदारी: हमें अपने शिष्यों में पूर्णता की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। हमें ईमानदारी की उम्मीद करनी चाहिए।

चार. आपके शिष्य अपनी परेशानियों, चोटों के साथ-साथ जीत और सपनों को साझा करना शुरू कर देंगे यदि आप अंतरंग हो सकें और अपने सपने भी साझा कर सकें।

*पाँच.* अपने प्रशिक्षु की बात ध्यान से सुनना यह दिखाना कि आप वास्तव में उनकी परवाह करते हैं। लेकिन अगर आप अपने आप में अधिक व्यस्त हैं, तो आप इसके विपरीत संवाद करेंगे।

***चरण 5****: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*
अध्याय 10c लेखक – कीथ फिलिप्स के अनुसार:

***धैर्य***

*धैर्य का अर्थ है क्रोध में धीमा होना। यह कर्म में विश्वास है, निष्क्रियता नहीं। धैर्य आपको अपने शिष्य की ओर अनुग्रह बढ़ाने के लिए मजबूर करता है बिना परमेश्वर के मानक से समझौता किए। यह कड़वाहट को रोकता है। धैर्य शिष्य बनाने वाले की पहचान है।*

*यीशु ने बिना योग्यता वाले पुरुषों से शुरुआत की जिन्हें हर कदम पर प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक था। उनके शिष्यों को धार्मिक चरित्र विकसित करने में बहुत समय लगा, लेकिन प्रभु ने अपने लोगों के साथ काम किया जब तक वे उनके समान नहीं हो गए। उन्होंने कभी उन्हें नहीं छोड़ा। उन्होंने याकूब और यूहन्ना की निर्भीकता, पतरस की चंचलता और थॉमस के संदेह को सहन किया। यही धैर्य था। परमेश्वर अपने बच्चों को भी यही मसीह जैसा धैर्य देने का वादा करता है (रोमियों 15:5)। शिष्य बनाने वालों को परमेश्वर के समय और मार्गदर्शन का इंतजार करना चाहिए। आपका शिष्य लोगों से डर सकता है, वह परिवर्तन का विरोध कर सकता है या प्राथमिकताओं में संघर्ष कर सकता है। ये बाधाएं पार की जा सकती हैं जब वह आपको देखता है और पवित्र आत्मा अपने जीवन में कार्य करता है। लेकिन आपको धैर्य रखना होगा। शिष्य बनाने में बहुत समय लगता है। गेटो में हम छह महीने किसी व्यक्ति के साथ मित्रता बनाने में बिता सकते हैं और फिर मसीह के प्रति प्रतिबद्धता करने से पहले छह महीने अतिरिक्त समय बिता सकते हैं। हम इस नए विश्वासी को एक साल तक पोषित कर सकते हैं और फिर तीन साल उसे*

*प्रजनन तक अनुशासित कर सकते हैं। फिर भी, यदि एक व्यक्ति प्रजनन शिष्य बन जाता है तो पांच वर्षों का निवेश प्रयास पूरी तरह से सार्थक होता है।*

*वर्जिल से पहली बार हमारी मुलाकात तब हुई जब उसने हमारी खिड़कियां तोड़ी और लॉस एंजिल्स में हमारे महिला कर्मचारियों के घर को लूट लिया। यह सात साल पहले की बात है। आज उसे दूसरों को शिष्य बनाने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। हमारे स्टाफ में से कोई भी इस समय निवेश पर पछतावा नहीं करता। गेटो में हम में से अधिकांश ने उन लोगों के लिए प्रार्थना की है और समय लगाया है जिन्होंने बाद में मसीह को अस्वीकार कर दिया। लेकिन हम निराश नहीं होते। हम आगे बढ़ते रहते हैं। "भगवान ने हमें यह अद्भुत कार्य दिया है और इसलिए हम कभी हार नहीं मानते। हम उलझन में हैं क्योंकि हमें नहीं पता कि चीजें ऐसी क्यों होती हैं, लेकिन हम हार मानकर हार नहीं मानते। हम गिर जाते हैं, लेकिन फिर उठते हैं और चलते रहते हैं" (2 कुरिन्थियों 4:1,8,9 पाउंड)। न तो संदेह और न ही विरोध आपके शिष्य में निवेश करने की प्रतिबद्धता को रोकना चाहिए। जब तुम्हारा धैर्य परीक्षा में हो, तो फिलिप्पियों 1:6 का दावा करके परमेश्वर की संप्रभुता में अपना विश्वास स्थापित करो: "क्योंकि मुझे इसी बात का भरोसा है, कि जिसने तुममें अच्छा काम शुरू किया है, वह मसीह यीशु के दिन तक उसे पूर्ण करेगा।"*

***ईमानदारी***

*हर स्वस्थ संबंध की नींव ईमानदार संवाद है। यह आपके एक-दूसरे के प्रति प्रतिबद्धता और इस ज्ञान पर आधारित है कि पारदर्शिता आपके अपने भले के लिए है। इफिसियों 4:25 हमें झूठ को छोड़कर सच बोलने का निर्देश देता है। आपका रिश्ता तब तक नहीं बढ़ेगा जब तक आप और आपका शिष्य खुलकर संवाद नहीं करेंगे। आपको एक-दूसरे की जरूरतों और भावनाओं के प्रति जागरूक होना चाहिए। अपने साथी से पूर्ण होने की उम्मीद न करें, बस ईमानदार और सच्चे हों। मैं किसी भी चीज़ को जानता हूँ जो ईमानदारी को बढ़ावा दे सके, इससे बेहतर कि शिष्यत्व संबंध की अंतरंगता। कई विश्वासियों को अपनी परेशानियों या चिंताओं को साझा करने में शर्म आती है, डरते हैं कि उनके सबसे निजी बोझ गपशप में बदल जाएंगे। लेकिन आपका शिष्य जानता है कि आप उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा करेंगे। वह आत्मविश्वास से आपसे किसी भी विषय पर बात कर सकता है क्योंकि वह आपके प्रेम में सुरक्षित है। "... पूर्ण प्रेम भय को दूर करता है..." (1 यूहन्ना 4:18) ताकि हम "प्रकाश में चलें..." (1 यूहन्ना 1:7)। आपका शिष्य किसी भी ऐसी बात को संप्रेषित करे जो उसे, शरीर या उसकी सेवा को प्रभावित कर सकती है, भले ही वह ऐसा महसूस न करे। अपने छात्र में ईमानदारी को प्रोत्साहित करें, स्वयं को संप्रेषित करें, सुनते हैं और आलोचना के लिए खुले रहते हैं।*

***खुद से संवाद करें।***

*यदि आप ईमानदारी से अपनी संघर्ष, चोटें और निराशाएं, साथ ही अपनी जीत, सपने और उपलब्धियां साझा करते हैं, तो आपका शिष्य जल्द ही अपनी भी बातें साझा करेगा। अगर आप गलती करते हैं, तो उसे स्वीकार करें, लेकिन हमेशा इसे राज्य के निर्माण और अपने चरित्र को मजबूत करने के नजरिए से करें। आपकी खुलापन यह बताएगा, "मैं सिखाने योग्य हूं और मैं आप पर भरोसा करता हूं।" यह ईमानदार संवाद को प्रेरित करेगा। कुछ साल पहले जोन की एक अच्छे पुरुष के साथ करीबी दोस्ती थी। लोग मानते थे कि वे शादी करेंगे, लेकिन भगवान ने उन्हें बताया कि उन्हें इस रिश्ते को आगे नहीं बढ़ाना चाहिए। जोन के किशोर बाइबल छात्र जानना चाहते थे कि रिश्ता क्यों खत्म हुआ और वह कैसा महसूस करती है। हालांकि यह दर्दनाक था, जोन ने भगवान द्वारा सिखाए गए सिद्धांतों को दोहराया और अपनी परेशानियां साझा कीं—दर्द, अकेलापन और यहां तक कि अकेली रहने का डर। उनकी लड़कियां उनकी खुलेपन से प्रभावित थीं। जोन ने उन पर भरोसा किया कि वे उनकी सेवा करेंगी! उस संकट के दौरान जोन की पारदर्शिता ने उनकी बेटियों के प्रति उनके प्रेम को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया। इससे वे अपनी संघर्षों को साझा करने के लिए स्वतंत्र हो गए। जोआन के जीवन में परमेश्वर के कार्य को देखकर, वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की उसकी शक्ति में आत्मविश्वास प्राप्त करने लगे। आज, उनमें से चार कार्यशील शिष्य हैं। हालांकि, विनाशकारी साझा करके अपने शिष्य का सम्मान न खोएं। कुछ अपरिपक्व ईसाई अपने नेता की असफलताओं के कारण लड़खड़ाते हैं या अपने पापों को सही ठहराते हैं। अन्य असुरक्षित हो जाते हैं या अपने नेता पर विश्वास खो देते हैं यदि वह कमजोर दिखता है। यदि आपको कुछ साझा करने में कोई संदेह है, तो पहले अपने नेताओं से संपर्क करें। यह अनुचित है कि आप अपने शिष्य से आपकी गहरी चिंताओं का बहुत अधिक हिस्सा लेकर जाएं। अत्यधिक संवाद, भले ही वह शुद्ध और सच्चा हो, उसे गर्व या हतोत्साहित कर सकता है। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मेरे पास तुमसे कहने के लिए और भी बहुत कुछ है, लेकिन अब तुम उन्हें सहन नहीं कर सकते" (यूहन्ना 16:12)। क्या और कितना साझा करना है, इस बारे में परमेश्वर के मार्गदर्शन के प्रति संवेदनशील रहें।*

***सुनो।***
*जब आपका शिष्य आपसे बात करे, तो उसकी बातों पर ध्यान केंद्रित करें। आपका पूर्ण ध्यान साबित करता है कि आप परवाह करते हैं। यदि आप इस बात में व्यस्त हैं कि आप कैसे प्रतिक्रिया देंगे बजाय इसके कि आप उसके विचारों को ध्यान से सुनें, तो आप उदासीनता व्यक्त करेंगे। यह संकेत दें कि आप समझते हैं, दोनों गैर-मौखिक और मौखिक पुष्टि द्वारा। ऐसे गहन प्रश्न पूछें जो उसकी खुलापन को प्रोत्साहित करें। लेकिन उसे बीच में न रोकें। "एक बुद्धिमान व्यक्ति अपनी जुबान रोकता है..." (नीतिवचन 10:14 पाउंड)।*

***रचनात्मक आलोचना के लिए खुले रहें।***
*रचनात्मक आलोचना को प्रोत्साहित करके अपने शिष्य पर विश्वास दिखाएं। जब आपका शिष्य आलोचना साझा करे तो ध्यान से सुनें। उनके विचारों पर विचार करें। वह आपकी ताकतों और कमजोरियों को प्रतिबिंबित करने और आपको यह समझाने की अनूठी स्थिति में हैं कि आपकी व्यक्तित्व उन चीज़ों को कैसे प्रोजेक्ट करता है जिनका आप इरादा नहीं करते। अपनी गलतियों के लिए माफी मांगें और फिर उन्हें सुधारने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करें। समय-समय पर, अपने शिष्य से परामर्श करें कि क्या वह कमजोरी जो उसने आपके ध्यान में लाई है, वह सुधर रही है। उनकी रुचि के लिए उनका धन्यवाद करें। "वैध आलोचना स्वीकार करना सम्मान की बात है" (नीतिवचन 25:12 पाउंड)। मैरी थीसेन, हमारी लॉस एंजिल्स महिला निदेशक, एक प्रतिभाशाली शिक्षक हैं। वह अपने शिष्यों को उनकी शिक्षाओं की आलोचना करके अपनी कौशल सिखाने के लिए कड़ी मेहनत करती हैं। लेकिन हाल ही में मैरी के एक शिष्य ने उनके पास एक समस्या लेकर आकर कहा: "आपका सुधार मुझे इतना नर्वस कर देता है कि जब आप आसपास हों तो मैं अच्छी तरह से पढ़ा नहीं पाता।" मरियम ने इस रचनात्मक आलोचना को उदारतापूर्वक स्वीकार किया और अब सुधार के लिए अपने सुझावों को अपने शिष्य की उपलब्धियों के लिए ईमानदार प्रशंसा के साथ संतुलित करती हैं। मरियम की खुलापन उनके संबंध को मजबूत करता है। आलोचना देने या प्राप्त करने की एकमात्र शर्त यह है कि यह जिम्मेदार और ईमानदार होनी चाहिए, विनाशकारी नहीं। एक-दूसरे के साथ खेल न खेलें। मज़ाक न करें और न ही दूसरों की कीमत पर अपनी निराशा से छुटकारा पाने की कोशिश करें। यीशु ने चेतावनी दी कि "... हर लापरवाह शब्द जो मनुष्य बोलेंगे, वे उसे न्याय के दिन में ही बताएंगे" (मत्ती 12:36)। यदि आलोचना भावनात्मक रूप से प्रेरित है, तो बाद में मिलने का समय निर्धारित करें ताकि आप दोनों स्थिति पर विचार कर सकें। याकूब 1:19 सिखाता है, "... लेकिन हर कोई जल्दी सुनने, बोलने में धीमा और क्रोध करने में धीमा हो।" यदि आपके संबंध में संघर्ष व्यक्तिगत राय या पसंद के कारण होते हैं, तो सुनें और चर्चा करें। विचारशील और लचीले रहें। पहला पतरस 4:8 कहता है, "सबसे बढ़कर, एक-दूसरे के प्रति अपने प्रेम में उत्साही रहो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढकता है।" यदि आप दोनों परमेश्वर की इच्छा की तलाश में हैं, तो आप मतभेदों को सुलझाते हुए भी एकजुट हो सकते हैं। "व्यक्तित्व टकराव" के बहाने कभी हार मत मानो मानो कि ऐसी समस्या असहनीय हो। कठिन संबंध हमें शुद्ध और धारदार बनाते हैं (नीतिवचन 27:17)। जब आपका शिष्य जानता है कि उसे आपको सुधारने की स्वतंत्रता है, तो वह आपकी बात सुनेगा और उस पर कार्रवाई करेगा। नीतिवचन 15:31 वादा करता है, "जिसका कान जीवनदायी फटकार सुनता है, वह बुद्धिमानों के बीच निवास करेगा।"*

*पृष्ठ 109-113*

***चरण 6:*** *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोध साझा करें, फिर प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की मांगों के लिए प्रार्थना करे।*

**स्रोत**: डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा द मेकिंग ऑफ अ डिसाइपल। प्रकाशक: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी, 1981। ISBN 0-8007-1181-5। परिचय: रॉबर्ट ई. कोलमैन। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) पुस्तक से बिना संशोधन के ली गई है।

संशोधित 20261123